This work is a digital copy of a play which was scripted and performed by Jana Natya Manch, Delhi. It is being made available on the internet via digital means to enable performance, translation, adaptation, or academic study.

Jana Natya Manch is placing this work in the public domain under the Creative Commons Attribution Non-Commercial Share Alike License 3.0.

Usage guidelines

The rights to the work rest with Jana Natya Manch. You may use it under the following conditions:

+ You will make non-commercial use of the work.
+ Maintain attribution of the work to Jana Natya Manch.
+ Sharing the work with others will be contingent upon all of the above conditions being agreed to by every subsequent user.

For further information visit www.jananatyamanch.org

Note: This PDF was prepared by exporting an earlier version of the file which used proprietary fonts. Due to some incompatibility some of the fonts have not converted properly. We believe you will be able to read the play nevertheless.

सब में साहिब भरपूर है जी

;जन नाट्य मंचऋ दिसंबर ९२ऋ १० कलाकारऋ ३० मिनट। यह नाटक अठारहवीं शताब्दी के संत कवि पलटू के जीवन और रचनाओं पर आधारित है। नाटक के गीत संत कवि पलटू के ही हैं।द्ध

पात्र विभाजन

१. बूढ़ा / पलटू
२. औरत
३. आदमी / फ़तेह मुहम्मद
४. हमलावर / महंत
५. क़ाज़ी
६. कोतवाल
७. उपाध्याय / लठैत
८. शास्त्री
९. रामदास
१०. लठैत / एक किसान

।गोलाकार अभिनय स्थल में एक बड़ी, काली चादर बिछी है जिसके नीचे एक अलाव, एक सूप, एक मोटी रस्सी और दो डंडे रखे हैं। चादर के दूसरी तरफ़, रंगीन कपड़ों से डिज़ाइन बना है। पहले संवाद के दौरान चादर को उठाकर, ६ पात्र घूमते हैं। संवाद ख़त्म होते-होते चादर का रंगीन हिस्सा ऊपर आ जाता है और डंडों की मदद से एक टैंट की विरचना बनती है। अलाव लकड़ियों से बना है, जिनके सिरे पर लाल कपड़ा बंधा है।

सभी पात्र : सच से ज़रूरी है सच की तलाश। *;दोहराते हैंद्ध*

सभी पात्र : शुरूआत में कुछ भी नहीं था
समय भी नहीं था, समय भी नहीं था
फिर हुआ इक धमाका बेआवाज़
सुननेवाला कोई भी नहीं था
फिर बने सितारे और कहकशां
असंख्य सूर्य, अनंत ख़ला
पानी धरती और चंद्रमा
जीव जंतु वनस्पतियां
सबसे बाद आया इंसां, इंसां, इंसां.....
तब तहज़ीब, सभ्यता ने डेरा डाला
बसा प्यार, मुहब्बत, भाईचारा।

।चादर बाहर ले जाई जाती है। एक पात्र अलाव में फूंकता है। दायरे पर बैठे सभी पात्र फूंकने की आवाज़ निकालते हैं।

एक : फिर इंसान ने सीखा आग का इस्तेमाल
खाना पकाना, धात पिघलाना और
कुछ ने सीखा आग लगाना।

।औरत छाज में अनाज साफ़ करती है।

औरत : औरत धरती की पहली दहक़ां
उसने ही दी खेती बाड़ी
इंसान ने सीख लिया
आढ़े वक़्त के लिए बचाना
और कुछ ने सीख लिया
भूखों पे हुक़्म चलाना
इंसान ने सीख लिया
इंसान को गुलाम बनाना

।हेईस्सा-हेईस्सा की आवाज़। पात्र ३ रस्सी पर काम करता है। चारों पात्र रस्से को खींचने का अभिनय करते हैं।

तीन : इंसान तरक़्क़ी करता गया
मिलकर आगे बढ़ता गया
कलपुर्ज़ों का दौर चला
मेहनतकश हो गए जमा
कहीं लगी हैं फ़ैक्ट्रियां
कहीं खड़ा कारख़ाना
जारी रहा मगर गुलामी का दस्तूर पुराना
कुछ लोगों ने सीख लिया
मज़दूरी से नफ़ा कमाना
हेईस्सा-हेईस्सा....

।आग, छाज और हेईस्सा की इकट्ठी आवाज़। तभी एक पात्र बदहवासी की हालत में दर्शकों में से दौड़ता हुआ आता है, जैसे कोई उसका पीछा कर रहा हो। यह आदमी फ़र टोपी, और सफ़ेद लखनवी कुर्त्ता पहने है। सब आवाज़ें रुक जाती हैं। काम बंद हो जाता है।

आदमी : बचा लो मुझे, बचा लो, मार डालेंगे मुझे वह, ज़िंदा नहीं छोड़ेंगे। *।बाक़ी सभी पात्र रस्सी से उसे घेरे में ले लेते हैं।*

औरत : क्या हुआ कौन मार डालेंगे?

आदमी : मुझे बचा लो, वो मेरा पीछा कर रहे हैं। आते ही होंगे।

मज़दूर : कौन आते होंगे?

बूढ़ा : घबराओ मत, बताओ क्या हुआ है।

आदमी : शहर में दंगा हो गया, फ़साद हो गया। वो लोग मेरा पीछा कर रहे हैं।

औरत : कौन लोग?

[एक आदमी हाथ में छुरा लिए घुसता है। टोपी वाले आदमी के ऊपर हमला करता है, छुरा हमलावर के हाथ से छूट जाता है। वह आग उठाकर फिर से हमला करता है।]

हमलावर : साले, हरामज़ादे ज़िंदा नहीं छोडूंगा मैं तुझे। मार डालूंगा। *[औरत छाज से आदमी को बचाती है। हमलावर से जलती हुई लकड़ी छीन लेती है।]*

औरत : पहले ही क्या कम दंगे फ़साद हुए हैं जो तुम और करवाने पर उतारू हो!

मज़दूर : यह तो पनाहगाह है। पिछले दंगों में बाबा ने हमें यहां पनाह दी थी। यहां आप किसी को मार नहीं पाएंगे।

हमलावर : अजी यह सारे झगड़े इन मुसधें की वजह से हो रहे हैं। और यह तभी ख़त्म होंगे जब सभी मुसधें को ख़त्म कर लेंगे। *[मारने के लिए बढ़ता है, दो पात्र उसे रोकते हैं।]*

आदमी : ग़लत। दंगे दंगाइयों की वजह से होते हैं। हिंदू या मुसलमान की वजह से नहीं।

बूढ़ा : बिल्कुल ठीक।

आदमी : दूसरी बात। जनाब आप मुझे मुसलमान कैसे कह रहे हैं।

हमलावर : अरे तुम्हारे चेहरे पर लिखा है। यह मुंह में पान, यह दाढ़ी, यह बोली, यह टोपी। मुसल्ले ही हो तुम। एक भी ज़िंदा नहीं छोड़ा जायेगा।

आदमी : *;दर्शकों सेद्ध* लीजिए हज़रात! और हमारी समझ में नहीं आ रहा था कि जनाब हमारी जान के दुश्मन क्यों हो गए। असल में लखनवी होना हमारी जान का जंजाल बन गया। न लखनऊ में रहते, न यह ज़बान आती, न यह पहनावा होता न यह पान का शौक़। अब भला सदियों की रवायतों को कैसे बदलें। ख़ैर जनाब आदाब। मेरा मतलब है नमस्कार। बंदे को रघुपति सहाय कहते हैं।

मज़दूर : लीजिए और आप इन्हें ही मारने चले थे।

औरत : लेकिन मान लीजिए कि यह मुसलमान ही होते फिर भी आप इन्हें क्यों मारेंगे? क्या पहले ही कुछ कम लोग मारे गए हैं दंगे फ़सादात में। और अगर यह बोली यह पहनावा हिंदुस्तानी नहीं है तो कुछ भी हिंदुस्तानी नहीं है। और आप *;आदमी से मुख़ातिब होकरद्ध* आदाब छोड़कर नमस्कार पर आ गए? सदियों की रवायत, तहज़ीब को एक ही झटके ने तोड़ डाला क्या?

बूढ़ा : और हुआ ही क्या है इन दंगों में। हर बार टूटी है विरासत-सांझी विरासत टूटी है हर बार। कबीर की तकली, मीरा की पायल टूटी है हर बार। हर बार ज़ख़्म लगे हैं दोस्ती को, क़ौमों की दोस्ती को। हर बार हमला हुआ है सदियों के भाईचारे पर, सच ज़ख़्मी हुआ है हर बार। ऊंची कोठियों से पैदा हुए झूठ ने वार किए इतने, कि सच को जली हुई तबाह-हाल झोपड़ियों में पनाह लेनी पड़ी। मगर इस बार न रोका गया तो सब टूट जाएगा इस बार। सब जल जाएगा इस बार। हर बार दंगों में रवायतें ही टूटी हैं हर बार।

हमलावर : बकवास। जब से इस देश में मुसधे आए हैं तब से दंगों की ही परंपरा है, वही विरासत है। हमारे मंदिरों को तोड़ने की विरासत। इसे दुरुस्त करना होगा। फ़र्क़ केवल इतना होगा कि अब हिंदू चुपचाप नहीं सहेगा। अब के दंगों से एक मज़बूत राष्ट्र की नींव रखी जाएगी। इस आग में तपकर ही हम कुंदन होंगे। यही है हमारी विरासत।

बूढ़ा : नहीं! धर्म के नाम पर दंगों की विरासत सच्ची विरासत नहीं। सच्ची विरासत है कबीर की, सरमद की, मंसूर की, मीरा की, रैदास की, बुधेशाह की। सच्ची विरासत है उन संतों की, उन लोगों की जो धर्म और जात के नाम पर बांटने वालों के ख़िलाफ़ खड़े हो गए। जो कह उठे अनहद, अनलहक़, जिन्होंने कहाः

''निर्भय, निर्गुण गुण तेरे गाऊंगा'' जो धर्म गुरुओं और राजा-महाराजाओं के ख़िलाफ़ खड़े हो गए जनता के साथ। सच्ची विरासत जनता की विरासत है। आओ मैं तुम्हें दिखाता हूं वह विरासत[]

[गायक मंडली का प्रवेश।]

जे पहुंचे ते पूछिए, तिन की एक ही बात।
सब साधौ की एक मति, यह बीच के बारह बाट।।
मन सब का हर लेई, सबन को राखै राजी।
तीन देख न सकें बैरागी, पंडित, क़ाज़ी।।
पलटूदास इक बनिया, रहे अवध के बीच।
ऐसी भक्ति चलावे मची नाम की कीच।।

[औरत छाज पर काम करती है, आदमी रस्सी से। दोनों गाते हैं।]

मोर पिया बसै पुर पाटन
हम धन हियवै हो ललना।
अपने पिय की सुधि जो पाऊं
हम धन कहवे हो ललना।
अंग-अंग भभूति लगाऊं
बन फल खाऊं हो ललना

धरतीऊं जोगनिया के भेस
पिय पास जाऊं हो ललना।

[एक शास्त्री, दो लठैत प्रवेश करते हैं।]

शास्त्री : रामदास।

किसान : पांय लागूं शास्त्रीजी।

शास्त्री : क्यूं रामदास तूने महंत जी का आदेश नहीं सुना।

किसान : क्या आदेश शास्त्रीजी?

लठैत : सुना है तू पलटूदास बनिये को अपनी फ़सल बेचता है?

शास्त्री : महंत जी का आदेश है ''जो कोई पलटूदास बनिये को अपनी फ़सल बेचे उसे धर्म और जात से बाहर कर दिया जाए।''

औरत : लेकिन पलटू साहिब तो बड़े नेक आदमी हैं। हमेशा सबका भला करते हैं।

किसान : हां, वो तो संत हैं। हमेशा हरिनाम का जाप करने को कहते हैं। हम भी जाते हैं उनके सत्संग में।

शास्त्री : सत्संग! अरे कुत्संग कहो, कुत्संग। पलटू जैसे लोगों की वजह से ही तो अधर्म फैल रहा है। उसके यहां सभी जात के लोग एक साथ बैठते हैं। और तो और म्लेच्छों को भी प्रवचन सुनाता है वो।

किसान : पर महाराज! पलटू साहिब तो कहते हैं कि मुसलमान और हिंदू एक ही ख़ुदा के बंदे हैं। राम और ख़ुदा सब में एक है।

औरत : पूरब में राम है पच्छिम में ख़ुदा।
उत्तर और दक्खिन कहो कौन रहता
दास पलटू कहे : साहिब सब में रहे
जुदा न तनिक मैं सांच कहता।

शास्त्री : बस बस बहुत हो गया। हम यहां उपदेश सुनने नहीं आए हैं। तुम पलटूदास को फ़सल नहीं बेचोगे, वरना तुम्हारा मंदिर में प्रवेश बंद कर दिया जाएगा, तुम्हारे पुरखों के लिए पिंडदान करने वाला भी कोई न होगा। यह महंत जी का आदेश है।

किसान : लेकिन महाराज....!!

शास्त्री : लेकिन वेकिन कुछ नहीं। दीनू इसे ठीक से समझा दे।

लठैत : अगर पलटू के पास फ़सल बेचने गए तो हाथ पैर तोड़ दिए जाएंगे। और फ़सल में आग लगा दी जाएगी। समझे।

शास्त्री : अब देखते हैं कैसे चलाता है यह पलटू अपना धंधा। क़ाज़ी ने तो पहले ही फतवा जारी कर दिया है कि जो मुसलमान किसान पलटू को फ़सल बेचेगा उसे दीन से बाहर कर दिया जाएगा। देखते हैं कौन उसे फ़सल देता है। भूखों मरना पड़ेगा तो होश ठिकाने आ जाएंगे। चलो।

[दोनों जाते हैं। औरत और आदमी एक-दूसरे को देखते हैं। फिर रस्सी और छाज उठाकर चले जाते हैं। पलटू का प्रवेश, गाता है।]

पलटू : मुसलमां रब्बी मेरी हिंदू भए ख़रीफ़
हिंदू भए ख़रीफ़ दोऊ हैं फ़सल हमारी
इनको चाहें लेई काट के बारी-बारी
साल भर में मिली हमको यही जागीरी
चाकर भए हजूर कौन अब करे तगीरी
दूनौ समुझाइ ज्ञान का दफ़्तर खोलै
सब कायल होइ जाय, अमल दै, कौऊ न बोलै।
दोऊ दीन के बीच में पलटूदास हरीफ़
मुसलमां रब्बी मेरी हिंदू भए ख़रीफ़।

[रामदास और फ़तेह मुहम्मद का प्रवेश। रामदास के कंधे पर रस्सा है।]

रामदास : गज़ब हो गया पलटू साहिब!

फ़तेह : पलटू साहिब गज़ब हो गया!

पलटू : फ़तेह मोहम्मद, रामदास क्या हो गया? इतने घबराए हुए क्यों हो?

रामदास : पलटू साहिब, महंत जी ने आपको फ़सल बेचने पर पाबंदी लगा दी है।

फ़तेह : क़ाज़ी ने भी ऐसा ही फ़तवा जारी किया है। अब हम आपको फ़सल नहीं बेच पाएंगे।

पलटू : 'ज्यों ज्यों रूठे जगत सब मोर होय कल्याण।' क़ाज़ी और महंत के किए से क्या होने वाला है। हम आज ही लंगर शुरू करेंगे, अखंड लंगर।

फ़तेह : लेकिन पलटू साहिब लंगर के लिए सामान कहां से आएगा? आपको फ़सल कौन देगा?

पलटू : 'मुसलमां रब्बी मेरी हिंदू भए ख़रीफ़।' मेरे सत्संग में आने वाले भक्त ही मेरी फ़सल हैं। तुम व्यर्थ घबराते हो। जाओ सबको न्यौता दे आओ।

रामदास : आप लंगर के न्यौते की बात कर रहे हैं, महंत ने तो यह भी कहा है कि जो कोई आपके सत्संग में आएगा उसे मंदिर में नहीं जाने दिया जाएगा। उसके पुरखों के लिए पिंडदान भी कोई नहीं करेगा।

फ़तेह : क़ाज़ी ने भी हुक्म दिया है कि आपके यहां आने वाले को काफ़िर क़रार दिया जाएगा। दीन से बाहर कर दिया जाएगा और मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर भी मनाही होगी।

पलटू : मंदिर-मस्जिद में तुम राम को ढूंढ़ते हो, अल्लाह को ढूंढ़ते हो। अरे वह तो इस काया के अंदर समाया है। सुना नहीं तुमने:
''तुरक मसीते अल्लाह ढूंढ़े-देहरे हिंदू राम गुंसाई
रैदास ढूंढ़िया राम-रहीम जहां मंदिर मस्जिद नाहि''।
जाओ सब लोगों को हमारा ये पैग़ाम पहुंचा दो *;गाता हैद्ध*

हमने यह बात तहक़ीक़ किया, सबमें साहिब भरपूर है जी
अपनी समझ कुंए का पानी, क्या नियरै क्या दूर है जी।
ग़ाफ़िल की ओर से सोई गया, चेतन का हाल हजूर है जी।
पलटू इस बात को न माने, तिस के मुंह परे धूर है जी।

[गाते हुए दोनों किसान और पलटू बाहर जाते हैं। महंत का प्रवेश। शास्त्री और उपाध्याय हड़बड़ाए हुए आते हैं।]

शास्त्री : चमत्कार हो गया महंत जी चमत्कार! महंत जी, कोई भी पलटूदास को फ़सल नहीं बेच रहा फिर भी उसका भंडार खाली नहीं होता।

उपाध्याय : उनके यहां लंगर लगातार जारी है अब तो हमें उसे अपने मठ में शामिल कर लेना चाहिए। वो चमत्कारी व्यक्ति है।

शास्त्री : फिर आपके पहले आदेश के चलते लोगों ने मंदिरों में आना भी बंद कर दिया है।

उपाध्याय : कर्मकांड के लिए भी यजमानों की संख्या में गिरावट आई है।

शास्त्री : पलटू साहिब के यहां लंगर में कई तरह के पकवान बन रहे हैं।

उपाध्याय : सुना है खीर बहुत स्वादिष्ट बनी है।

शास्त्री : हमें भी न्यौता आया है। पर हम आपके आदेश के चलते जा नहीं पा रहे हैं।

उपाध्याय : हमने ऐसा न्यौता ज़िंदगी में पहली बार ठुकराया है।

शास्त्री : आप अपना आदेश रद्द कर दीजिए।

महंत : तुम लोग एकदम मूर्ख हो। भला चमत्कार जैसी भी कोई चीज़ होती है? ज़रूर वो हरामज़ादे किसान पलटू को चोरी छिपे फ़सल बेच रहे होंगे और तुम लोग मूर्खों की तरह चमत्कार-चमत्कार चिध रहे हो। किसानों ने तो मंदिरों में आना बंद कर ही दिया है। इस पलटूदास की प्रसिि(अगर इसी तरह बढ़ती रही तो भूखे मरने की नौबत आ जाएगी। कल का पलटू बनिया संत पलटू बन बैठा है। और हम महंतों को कोई पूछता भी नहीं। इसका पक्का इलाज करना होगा। सुना है क़ाज़ी ग़ुलाम हुसैन भी बहुत परेशान है। वह कोतवाल से मिलने गया है। चलो हम भी कोतवाल के पास जाकर अपना प्रस्ताव उसके सामने रखें।

[क़ाज़ी और कोतवाल का प्रवेश।]

कोतवाल : लीजिए क़ाज़ी साहेब। महंत जी भी आन पहुंचे। आइए आइए महंत जी। कहिए कैसे आना हुआ?

महंत : हम भी उसी कारण से यहां आए हैं जिस कारण क़ाज़ी ग़ुलामहुसैन यहां पहुंचे हैं।

कोतवाल : तो आप लोग भी पलटूदास बनिये की शिकायत लेकर आए हैं।

महंत : जी हां कोतवाल साहेब। पलटू की वजह से पूरे समाज पर बुरा असर पड़ रहा है। अगर उसका प्रचार जारी रहा तो शहर में दंगे भी हो सकते हैं। आपको इसे रोकना होगा वरना इसकी सारी ज़िम्मेदारी आपकी होगी।

कोतवाल : उस सबकी आप फ़िक्र न करें। हम अपना काम बख़ूबी जानते हैं। आप यह बताइए कि आप हमसे क्या चाहते हैं?

महंत : पलटूदास का कोई पक्का इंतज़ाम करना होगा।

क़ाज़ी : हां, यही ठीक रहेगा। यह रोज़-रोज़ का बखेड़ा ही ख़त्म हो। कोई पक्का इंतज़ाम कीजिए कोतवाल साहेब।

कोतवाल : देखिए जनाब, पलटू को ख़त्म करना हमारे लिए कोई बड़ी बात नहीं है। लेकिन इस तरह उसे ख़त्म करने से उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी कम नहीं होगी। और उंगली उठेगी सीधे आप लोगों पर। आप सोच लीजिए। वैसे हमारी मानिए तो पलटू से शास्त्रार्थ कीजिए, दीन धर्म के मुद्दों पर उससे बहस मुबाहिसा कीजिए।

महंत : क्या कह रहे हैं आप! उससे शास्त्रार्थ जिसे शास्त्रों से कुछ लेना-देना ही नहीं।

क़ाज़ी : एक क़ाफिर से दीन के मुद्दों पर बहस मुबाहिसा। यह तो कुफ़्र होगा, कुफ़्र।

कोतवाल : आप लोग क़तई अहमक़ हैं। आप क्या समझते हैं कि हाकिम पलटूदास से ख़ुश हैं? उसकी तरफ़दारी करते हैं? अरे वह आदमी किसानों का हिमायती है। हिंदू-मुसलमान को एक बताता है। धर्मगुरुओं के ख़िलाफ़ बोलता है। हाकिम भी उसे ख़त्म करवाना चाहते हैं। लेकिन तरकीब वह लड़ानी होगी कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। आप लोग उससे शास्त्रार्थ करें, मुबाहिसा करें। अगर उसे हरा दिया तो आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नहीं हरा पाए तो कहेंगे कि संत पलटू महान थे। एक हादसे में उनकी मौत हो गई।

महंत : बहुत ख़ूब!

क़ाज़ी : सुभानल्लाह! क्या बात है।

कोतवाल : तो यह तय रहा। *[सबका प्रस्थान।]*

गायक मंडली : सात दीप नौखंड में, देख्यो ततू निचोय
साध का बैरी कोई नाहि बाम्हन, क़ाज़ी होय।
सब बैरागी मिल के पलटू किया अजात
पलटू किया अजात प्रभुता देखी न जाई
कल का बनिया संत प्रगट भा सब दुतियाई।
हम सबसे बड़े महंत हमें न कोई जाने

बनिया करे पाखंड अरे सब उसको माने।
ऐसी ईर्ष्या जान कोऊ न आवे खाई
बनिया ढोल बजाए रसोई दिया लुटाई।
सात दीप नौ खंड में, देख्यो ततू निचोय...

[कुछ पात्र आपस में बातचीत करते हैं।]

रामदास : सुना है महंत और क़ाज़ी, कोतवाल के साथ मिलकर पलटू साहिब को पकड़ने आ रहे हैं।

फ़तेह : अजी मैंने तो सुना है महंत और क़ाज़ी, पलटू साहिब से बहुत ख़फ़ा हैं। ख़त्म करने की साज़िश की है।

किसान : पलटू साहिब को कौन मार सकता है। सुना नहीं
"ज्यों ज्यों रूठै जगत सब मोर होय कल्याण
पलटू बार न बांकि है जो सिर पर भगवान"

औरत : लेकिन हमें कुछ करना होगा।

किसान : हम कर ही क्या सकते हैं।

औरत : हम सब एक होकर उनका मुक़ाबला कर सकते हैं।

फ़तेह : सुनो उनकी आवाज़ें आ रही हैं। लगता है काफ़ी नज़दीक आ गए हैं।

औरत : आओ हम सब मिलकर उन्हें रोक लें।

[रस्सी लेकर सब लोग एक दीवार बनाते हैं। क़ाज़ी, महंत, कोतवाल, शास्त्री और उपाध्याय का प्रवेश]

कोतवाल : क्या बात है तुम लोगों ने रास्ता क्यों रोक रखा है?

रामदास : हम आप लोगों की साज़िश कामयाब नहीं होने देंगे।

फ़तेह : आप पलटू साहिब का बाल भी बांका न कर पाएंगे।

महंत : अरे आप सब को किसी ने बहका दिया है। हम तो संत पलटू साहिब से धर्म पर चर्चा करने जा रहे हैं।

क़ाज़ी : हां-हां। हम तो उनसे रूहानी और दीन के मुद्दों पर बहस मुबाहिसा करने जा रहे हैं।

कोतवाल : आप लोग भी वहां चलिए। मैं ख़ुद इस शास्त्रार्थ और सत्संग का आनंद लेने जा रहा हूं।

रामदास : अगर ऐसा है तो हम आपके साथ ही चलते हैं।

[सभी पलटू साहिब के पास जाते हैं। पलटू साहिब अलाव जला रहे हैं।]

महंत : पलटू साहेब हम आपसे शास्त्रार्थ करने आए हैं।

क़ाज़ी : पलटू साहिब हम आपसे दीन धर्म पर मुबाहिसा करने आए हैं।

पलटू : सांचा हरि दरबार है, झूठा टिकै न कोई
झूठा छिपै न लाख छिपावै, अंत को होत उधार
झूठा रंग रंगे जो कोई, चटख रहे दिन चार
हरि की भक्ति सहज है, नाहि ज्यों चोखी तलवार
पलटूदास हाथ अपने से, सिर को लेई उतार

क़ाज़ी : पलटू साहिब आप तो मुसलमानों को हरि का नाम सुनाते हैं। यह कुफ़्र है।

पलटू : सो काफ़िर जो बोले काफ़
दिल अपना नहि रखे साफ़।
साईं को पहचाने नाहि
कुड़ कपट सब उसकी माहि।

महंत : आप तो मंदिरों में जाना व्यर्थ बताते हैं। फिर पूजा कहां करते हैं? आरती कहां गाते हैं?

पलटू : आतम माहि राम है, पूजा ताकि होई
सेवा बंदन आरती, साध करै सब कोई

उपाध्याय : किन शास्त्रों में आपने ऐसा ज्ञान पाया है। किस वेद पुराण में यह शिक्षा पाई है?

पलटू : काया अंतर पाइया निरंतर निराधार
सहजै आप लखाइया ऐसा समरथ पार

शास्त्री : तुम्हारे भगवान का रंग-रूप क्या है?

पलटू : इसक अल्लाह की जात है
इसक अल्लाह का रंग
इसक अल्लाह औजूद है
इसक अल्लाह का अंग।

महंत : हम राम को पूछते हैं तुम अल्लाह की बात करते हो।

क़ाज़ी : हिंदू-मुसलमान में तुम कोई भेद नहीं करते हो। यह कैसा दीन है यह कैसा धर्म है?

पलटू : न ब्राह्मण न शूद्र, न सैयद शेख है
हम तुम कोई नाहि बोलता एक है
दूजा कोऊ नाहि यही तहक़ीक़ है।
अरे हां पलटू लाख बात की बात कहे हम ठीक है

क़ाज़ी : कुफ़्र! कुफ़्र!

शास्त्री-उपाध्याय-महंत
: अधर्म, घोर कलयुग, पापी, दुरात्मा

[पूरे सवाल-जवाब के दौरान अलाव की आठों लकड़ियां क़ाज़ी, महंत, शास्त्री, उपाध्याय और कोतवाल अपने हाथों में ले चुके हैं। और वो आगे बढ़ते हैं। पलटू गाता है।]

पलटू : हमने यह बात तहक़ीक़ किया, सब में साहिब भरपूर है जी...

[गाने के दौरान यह लकड़ियां पलटू के इर्द-गिर्द रख दी जाती हैं। एक क्षण की शांति। फिर किसान, औरत और जमात उठती है। रस्सी हाथ में लिए पलटू के इर्द-गिर्द घूमते हैं।]

सब : तुम लोग पलटू साहिब को इतनी आसानी से नहीं मार पाओगे। वह हमेशा ज़िंदा रहेंगे। अपने शब्दों में, अपने गीतों में, हमारे लबों पर। उनकी रवायतें, उनकी विरासत अब हममें ज़िंदा है।
हमने यह बात तहक़ीक़ किया
सब में साहिब भरपूर है जी...

अचानक महंत का रोल करने वाला पात्र जो कि हमलावर है अपना लिबास उतारता है और कहता है।

हमलावर : सब बकवास है। पलटू, कबीर, रैदास सब बकवास थे। यह हमारी रवायतें नहीं हैं। यह लोग मुसलमानों के दलाल थे। बहकाए हुए लोग थे।

आदमी : वाह बहुत ख़ूब। ज़ाहिदे तंग नज़र ने मुझे काफ़िर जाना और काफ़िर ये समझता है कि मुसलमान हूं मैं। यही हुआ पलटू के साथ, कबीर के साथ और अब हमारे साथ भी, मुसलमानों ने हमें काफ़िर कहा है और हिंदुओं ने मुसलमानों का दलाल। लेकिन पलटू की विरासत ही हमारी सच्ची विरासत है। अब हम इसे मज़बूत करेंगे। जो रास्ता पलटू साहिब ने ख़ुद जलकर हमें दिखाया है, जो रवायतें कबीर, सरमद, मंसूर, रैदास, बुल्लेशाह, गुरु नानक की रवायतें हैं, जिन बोलों को लाखों किसानों, औरतों, मर्दों ने गाया है। उस रास्ते पर चलकर उन रवायतों, उन बोलों के साथ हम तुम्हारा मुक़ाबला करेंगे। *सबसे आगे पलटू आग लेकर, पीछे सूत और रस्सी के साथ फ़ॉरमेशन बनती है। गाना गाते हैं।*

गाना : हमने यह बात तहक़ीक़ किया, सबमें साहिब भरपूर है जी...

o